अच्युतराय मोदक (१७७८-१८२८ ई.) कृत 'नीतिशतकम्' की अज्ञात एवं दुर्लभ पाण्डुलिपि

- प्रताप कुमार मिश्र©

pratapm1977@gmail.com

सार-संक्षेप

अच्युतराय मोदक संस्कृत-साहित्य-शास्त्र के इतिहास में एक सुपरिचित आचार्य हो आए हैं। 'साहित्यसार' नामा विशालकाय उनका अलंकार-ग्रन्थ पिछली सदी से संस्कृत-काव्यशास्त्रियों के मध्य समादृत रहा है। लेकिन मोदक आचार्य से कहीं अधिक कवि की भी प्रतिभा रखते थे और उनके उपलब्ध साहित्यिक ग्रन्थों के विश्लेषण-मात्र से संस्कृत-समीक्षा परम्परा उन्हें महाकवि मानती आयी है। दुःखद है उनके काव्य-ग्रन्थों की अनुपब्धि और उनका अप्रकाशित होना। मोदक-रचित कई दुर्लभ काव्य-ग्रन्थ अभी भी उपलब्ध नहीं हो सके हैं। प्रस्तुत शोधपत्र में उनकी एक दुर्लभ रचना 'नीतिशतकम्' की उपलब्ध पाण्डुलिपि और उसके वर्ण्य-विषय पर चर्चा की जा रही है।

की-वर्ड्स - अच्युतराय मोदक, साहित्य-सार, संस्कृत-काव्यशास्त्र, आर्याशतकम्, नीतिशतकम्, नीतिमुकुल, रतिनीतिमुकुल, अद्वैतामृतमंजरी.

प्रत्नकीर्ति, भाग-1, संख्या-1 में प्रवीण कुमार मिश्र द्वारा लिखित 'अच्युतराय मोदक कृत आर्याशतकम् की अज्ञात एवं दुर्लभ पाण्डुलिपि' शीर्षक शोधपत्र प्रकाशित हुआ है जिसमें मोदक के एक अज्ञात शतक-काव्य 'आर्याशतकम्' पर विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया गया है। यद्यपि लेखक ने अपने पत्र में मोदक के अन्य शतक-काव्यों की चर्चा भी की है और इस क्रम में नीतिशतकम् का भी उल्लेख हुआ है किन्तु अज्ञात और सर्वथा दुर्लभ होने के कारण प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक ने मोदक द्वारा रचित 'नीतिशतकम्' नामा इस शतक-काव्य को 'प्रत्नकीर्ति' के पाठकों तक पहुंचाने के उद्देश्य से इस शोधपत्र को 'प्रत्नकीर्ति' के इस अंक में प्रकाशित करने का निश्चय किया। यह उल्लेखनीय है कि यह शोधपत्र अपने वास्तविक स्वरूप में 'अखिल भारतीय प्राच्यविद्या सम्मेलन' के जम्मू अधिवेशन-2006 ई. में 'मैन्युस्क्रिप्टोलॉजी' सेशन् में पढा गया था और सेशन् की अध्यक्षता कर रहे प्रख्यात पाण्डुलिपि-विद् आचार्य ब्रजबिहारी चौबे ने इस शोधपत्र की पर्याप्त प्रशंसा करते हुए विवेचित हस्तलिखित-प्रति के प्रकाशन पर जोर दिया था। संयोग से आचार्य जी का वह स्वप्न हाल के वर्षों में पूर्ण होने को आया है। हिन्दी-अनुवाद सहित इस शतक तथा अच्युतराय मोदक के अन्य दो शतकों, कुल तीन शतक-काव्यों का संपादन लगभग पूर्ण हो चुका है और शीघ्र ही इसका प्रकाशन सम्भावित है।

संस्कृत-साहित्य में शतक-काव्यों की परंपरा लगभग दो हजार वर्ष प्राचीन है और काल के इस लम्बे अन्तराल में सहस्राधिक कवियों ने असंख्य शतक-काव्यों का निर्माण कर संस्कृत-साहित्य को आशातीत समृद्धि प्रदान की है। शतक-काव्यों की इस परंपरा में भर्तृहरि (अनुमानतः १० वीं शती) एवं उनके शृंगार-नीति-वैराग्य

© अखिल भारतीय मुस्लिम-संस्कृत संरक्षण एवं प्राच्य शोध संस्थान, वाराणसी.

नामा तीन शतक-काव्यों ने परवर्ती कवियों को एक सशक्त दिशा एवं उर्व्वर भावभूमि प्रदान की थी आगे चलकर जिस पर अनेकानेक कवियों ने स्वयं शृंगार-नीति एवं वैराग्य पर कई शतक-काव्यों की रचना की। उपर्युक्त विषयों पर शतक-काव्यों के प्रणयन की यह परंपरा विगत हजारों वर्ष से निर्बाध चलती चली आ रही है और आज भी शृंगार, नीति तथा वैराग्य को लेकर संस्कृत में शतक-काव्यों की रचना की जा रही है।

प्रस्तुत शोधपत्र में संस्कृत-साहित्य के एक ऐसे ही ग्रन्थ-रत्न और ग्रन्थकार-शिरोमणि का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है जो आज तक उपर्युक्त असुरक्षित स्थान से बाहर न निकाले जा सके थे। यह ग्रन्थ है संस्कृत लघुकाय काव्यों की परंपरा में शतक-काव्य के अन्तर्गत परिगणित होने वाला एक विलुप्त पद्यकाव्य 'नीतिशतकम्' और इसके रचयिता हैं; १८ वीं सदी के उत्तरार्ध एवं १९ वीं सदी के प्रारंभ में अपने जन्म तथा साहित्य-आराधना से दक्षिण-भारत ही नहीं अपितु समस्त भारत को गौरवान्वित कर देने वाले, संस्कृत काव्य-शास्त्रीय परंपरा के अन्तिम धुरी-निर्वाहक एवं रससिद्ध कविता के आकर महाकवि अच्युतराय मोदक।

ग्रन्थ एवं ग्रन्थकार से संबन्धित किसी भी प्रकार के विवरण से पूर्व पाण्डुलिपि से संबन्धित संक्षिप्त विवरण को यहाँ प्रस्तुत करना उचित होगा। 'नीतिशतकम्' की यह पाण्डुलिपि प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को विगत वर्षों उसे काशी के स्वनामधन्य साहित्यकार, संस्कृत-हिन्दी एवं अंग्रेजी के सिद्ध रचनाधर्मी, हास्य-व्यंग्य परंपरा के त्रिमुनियों में अन्यतम पण्डित प्रोफेसर कान्तानाथ पाण्डेय 'राजहंस' (पूर्व-प्राचार्य - हरिश्चन्द्र महाविद्यालय) के निवास से तब प्राप्त हुई जब वह इसी प्रकार के घरों तथा अन्यान्य स्थलों पर प्राचीन ग्रन्थों एवं पाण्डुलिपियों के अन्वेषण हेतु स्वनिर्मित योजना के अन्तर्गत भ्रमण कर रहा था। यूं तो 'राजहंस' जी का निधन १९७२ ई. में ही हो गया था और दुर्भाग्य से आपका वह विशाल वैयक्तिक पुस्तकालय कालान्तर में संरक्षित भी न रह सका किन्तु आपकी दो विदुषी पुत्रियों ने पिता से प्राप्त एकमात्र इस ज्ञान-विज्ञान परक पैतृक-दाय को कथञ्चित संभाले रखा। मेरे सौभाग्य से आपकी कनिष्ठ पुत्री डॉ. शुचिस्मिता पाण्डेय (उपसंपादक, विश्वकोश-विभाग, नागरीप्रचारिणी सभा, काशी) ने; वैयक्तिक रूप से घरों एवं असुरक्षित स्थानों में उपलब्ध प्राचीन पुस्तकों तथा पाण्डुलिपियों के संरक्षण परक, -मेरे सत्संकल्प को महत्ता दी और अपनी ज्येष्ठ-भगिनी डॉ. तपस्या उपाध्याय के पास असुरक्षित पड़ी प्राचीन पुस्तकों को मुझे उपलब्ध करा दिया। आपके पास उपलब्ध प्राचीन एवं दुर्लभ २०-२५ पुस्तकों का यह लघुकाय संग्रह स्वयं 'राजहंस' जी का संग्रह था जो काल के कुटिल हाथों से आज तक बचा रह सका था। इन्हीं प्राचीन पुस्तकों की ढ़ेर में विवेच्य हस्तलिखित-ग्रन्थ 'नीतिशतकम्' भी उपलब्ध हुआ। अधुना यह हस्तलिखित ग्रन्थ 'अखिल भारतीय मुस्लिम-संस्कृत संरक्षण एवं प्राच्य शोध संस्थान, वाराणसी' के पुस्तकालय में सुरक्षित है।

पुस्तकालय में उपलब्ध विवेच्य ग्रन्थ का सामासिक विवरणात्मक परिचय निम्नवत् है -

"ग्रन्थनाम : नीतिशतकम्, ग्रन्थकार : अच्युत, आधार : देशी कागज, लिपि : देवनागरी, साइज : २५ ११, कुल पृष्ठ : ८, प्रतिपृष्ठ पंक्ति : ८, प्रतिपंक्ति अक्षर : ४२-४५, लिपिकार : अज्ञात, लिपिकाल : अज्ञात, अवस्था : प्राचीन, स्थिति : पूर्ण, विषय : साहित्य, पुस्तकालय में रक्षित संख्या : हस्त.३२८ / राजहंस-संग्रह-०९. ।"

पाण्डुलिपि के सभी ८ पत्र 'हरताल' से भिंगोये गए हैं अतः सर्वथा सुरक्षित तथा संरक्षित हैं। चटक काली स्याही का प्रयोग पद्यों के लेखन व इससे हल्की लाल स्याही का प्रयोग पद्यों की संख्या के लेखन में तथा पद्यों की

समाप्ति हेतु डाली जाने वाली खड़ी पाई के लेखन हेतु किया गया है। अक्षर सुवाच्य हैं और स्पष्ट रूप से पढ़े जाते हैं किन्तु लिपिकार की असावधानी से यह पुस्तक भी अछूती नहीं है अतः कभी-कभी एकाध मात्रा या अक्षरों की छूट विशेषतया दर्ज की जाती है। ऐसे स्थलों पर जहाँ लिपिकार की असावधानी से अक्षर या मात्रा के हेर-फेर के कारण अर्थानुसन्धान में बाधा पहुँचती है वहाँ नीचे हमने उसके स्व-कल्पित शुद्ध पाठ को () कोष्ठक में प्रस्तुत किया है।

इस हस्तलेख का प्रारम्भ निम्ननिखित पद्य से होता है -

।। श्रीशं वन्दे।। श्रीगणेशाय नमः।।

श्रीगौर्यालिङ्गितं वन्दे सुप्रसन्नं सदाशिवं ।

युक्तं गुहगणेशाभ्यां सु(स्तु)तं वेदैः सुरै(र)पि ।।१।

और ग्रन्थ का अन्त निम्नलिखित पद्य से होता है :

पाण्डुरङ्गाख्यहंसस्य गुरुपादाब्जशायिनः।
सौरभ्यायास्तु सततं तनीतिशतपत्रकम् ।। १०४।।

हस्तलेख की अन्तिम पुष्पिका को निम्नवत् पढ़ा जा सकता है :

इत्यच्युतरचितं नीतिशतपत्रं संपूर्णम्।।
इ० यु० पिं० भ० स्ति०।। श्रीमद्गुरुडध्वजाय नमः।।

पुष्पिका के अन्तिम वाक्यों से इस ग्रन्थ का नाम 'नीतिशतपत्रम्' भी ज्ञात होता है जबकि इसका वास्तविक अभिधान इसके अन्तिम पद्य, पद्य संख्या : १०४ के अन्तिम पंक्ति में स्पष्ट बताया गया है : नीतिशतपत्रकम् इत्यादि। किन्तु ध्यान देने की बात है कि दोनों में ही कोई भेद नहीं। पुष्पिका से ही ग्रन्थकार का नाम भी स्पष्ट हो जाता है और वह है अच्युत।

नीतिशतकम्' की प्रकृति एवं विषय-वस्तु -

यहाँ हम प्रस्तुत ग्रन्थकार अच्युत पर किसी भी प्रकार का विवरण प्रस्तुत करने से पूर्व 'नीतिशतकम्' के वर्ण्यविषय को संक्षेप में सूचित करना अधिक उचित समझते हैं। ग्रन्थकार ने नीति से संबन्धित अपने समस्त भावों को निम्नलिखित शीर्षकों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। शीर्षकों के आगे प्रदर्शित संख्या; उस शीर्षक से सम्बद्ध भावों पर लिखे गए कुल पद्यों की संख्या है -

१. सज्जन-प्रशंसा	०१ से ०६ तक.
२. दुर्जन निन्दा	०७ से ११ तक.
३. यत्नवाद उपपादन	१२ से १६ तक.
४. मूढत्व निन्दा	१७ से २१ तक.
५. विद्याविघ्न एवं उनके साधन	२२ से २६ तक
६. दुर्जन दुराराध्यता	२७ से ३१ तक.
७. धन-निन्दा	३२ से ३६ तक.
८. परस्त्री-सम्भोग निन्दा	३७ से ४१ तक.
९. तारुण्य-मद निन्दा	४२ से ४६ तक.

१०. अभ्यास माहात्म्य	४७ से ५१ तक.
११. नम्रता की प्रशंसा	५२ से ५६ तक.
१२. शान्ति-स्तुति अथवा शान्ति-प्रशंसा	५७ से ६१ तक.
१३. वाणी प्रशंसा	६२ से ६६ तक.
१४. अविवेक की निन्दा एवं विवेक-प्रशंसा	६७ से ७१ तक.
१५. कलावर प्रशंसा	७२ से ७६ तक.
१६. प्रमाद निन्दा	७७ से ८१ तक.
१७. क्रोध निन्दा	८२ से ८६ तक.
१८. तृष्णा निन्दा	८७ से ९१ तक.
१९. स्वधर्म प्रशंसा	९२ से ९६ तक.
२०. आत्म-परिचय, ग्रन्थ-समाप्ति-सूचना	९७ से १०४ तक.

उपर्युक्त बीस विषयों पर कवि ने अपनी लेखनी चलाई है और पारंपरिक 'नीतिशतक'-लेखन की भांति संस्कृत-साहित्य की परंपरा को अक्षुण्ण रखते हुए कालोचित जीवन एवं मूल्यों के परिष्कार एवं परिवर्धन को बख़ूबी रूपायित किया है। पारंपरिक नीति-विषयक लेखन से इसकी भिन्नता को यहाँ संकेतित करना हमारा प्रयोजन नहीं किन्तु ग्रन्थकार के नव-प्रयोग की ओर विद्वानों का ध्यान आकृष्ट अवश्य होना चाहिए। जिन बीस विषयों से संबन्धित भावों को कवि ने अपने काव्य का विषय बनाया है उनके निरूपण में उसकी भाषा और शैली बहुत ही सरस, रोचक तथा प्रभावपूर्ण बन पड़ी है। प्रत्येक भाव-विवेचन हेतु प्रयुक्त भाषा की प्रौढि; किन्तु विवेच्य वस्तु तथा संबोध्य व्यक्ति को ध्यान में रखने के कारण प्रयुक्त भाषा की तथाकथित सरलता और शैली की नवीनता ने संप्रेष्य भावों को बहुत ही रमणीय आकृति प्रदान कर दी है। जिसके कारण समूचे शतक-काव्य के अनुवाचन तक कहीं कोई बोझिल वातावरण नहीं बनने पाता। दैनिक जीवन में जिन द्वन्द्वात्मक अनुभूतियों, हृद्गत भावों, मानसिक आवेगों, उच्च संवेगों तथा विविध कारणों से उच्चावच की स्थिति को प्राप्त होते विचारों को हम साक्षात् करते हैं उन्हीं की कभी स्तुति, तो कभी निन्दा, कभी तत्परक विधि तो कभी तत्संबन्धी निषेध; कवि की अपनी सूझ-बूझ और काव्य-चातुरी के कारण बहुत ही रोचक और मनोहारी हो गए हैं। भाषा-शैली के समान ही अपने विचारों के संप्रेषण हेतु कवि ने नीति जैसे दुरूह विषय को सर्वजन-बोध्य एवं ग्राह्य बनाने हेतु संस्कृत-साहित्य के सबसे प्रभावी छन्द अनुष्टुब् का प्रयोग किया है और इस रूप में समूचा यह शतक-काव्य कुल १०४ अनुष्टुब् छन्दों में पूर्ण होता है।

ग्रन्थकार 'अच्युत' अथवा 'अच्युतराय मोदक'

अखिल भारतीय मुस्लिम-संस्कृत संरक्षण एवं प्राच्य शोध संस्थान, वाराणसी में उपलब्ध विवेच्य पाण्डुलिपि के सामासिक विवरण में इस हस्तलेख से संबन्धित जिन तथ्यों को प्रस्तुत किया है उनके अनुसार तो इस शतक-काव्य के रचयिता कोई 'अच्युत'-नामा कवि ठहरते हैं किन्तु मात्र इस नाम से ग्रन्थकार के विषय में कुछ भी जानने में हमें कोई सहायता नहीं प्राप्त होती। चूंकि संस्थान जहाँ यह हस्तलिखित प्रति सुरक्षित है में यह पाण्डुलिपि

'नीतिशतकम्' के रूप में उपलब्ध है अतः प्रस्तुत शोधपत्र हेतु जब 'नीतिशतकम्' के रचयिता 'अच्युत' पर विवरण लेने हेतु विविध हस्तलिखित ग्रन्थों की विवरणिकाओं को देखा गया तो असफलता ही हाथ लगी और इस शतककाव्य और इसके रचयिता से संबन्धित विवरण न तो आफ्रेक्ट के 'कैटॉलॉगस् कैटोलॉगोरम्' और ना ही प्रो. वी. राघवन् द्वारा संपादित एवं मद्रास यूनिवर्सिटी से प्रकाशित ' न्यू कैटॉलॉगस् कैटोलॉगोरम्' में उपलब्ध हुए। बहुत परिश्रम के बाद भी जब ग्रन्थकार एवं उसके इस काव्य से संबन्धित विवरण उपलब्ध नहीं हुए तो प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक ने यही निर्णय लिया कि संभवतः अच्युत' नामा ये कवि और उनका यह शतक; संस्कृत-साहित्य के विलुप्त ग्रन्थकार एवं ग्रन्थ हैं किन्तु कालान्तर में 'अच्युत'-नाम से प्रारंभ होने वाले सभी कवियों के विवरण एकत्रित कर जब प्रस्तुत कवि का मिलान किया गया तो प्रो. पी. वी. काणे (काणे) के 'संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास' में प्रसंग-प्राप्त 'अच्युतराय मोदक' (मोदक) से हमारे 'अच्युत' कवि का मिलान हो पाया। काणे द्वारा सूचित मोदक-कृत 'साहित्यसारटीका' नामक ग्रन्थ के आद्योपान्त अध्ययन ने इस प्रकरण के सभी रहस्य खोल दिये और शीघ्र ही यह स्थिर हो गया कि 'नीतिशतपत्र' के रचयिता 'अच्युत' 'अच्युतराय मोदक' से भिन्न कोई दूसरे ग्रन्थकार नहीं हैं। कालान्तर में इसकी पुष्टि प्रो. वी. राघवन् के 'न्यू कैटॉलॉगस् कैटोलोगोरम्' के प्रथम-भाग में प्रस्तुत 'मोदक' के विवरण से भी हो गई। इनका विवरण निम्नवत् है -

'साहित्यसारव्याख्या' संस्कृत काव्यशास्त्र से संबन्धित एक अत्यन्त प्रौढ़ तथा गंभीर ग्रन्थ है जिसकी रचना इन्हीं अच्युतराय मोदक ने की थी। इस ग्रन्थ का मूल एवं टीका; दोनों ही भाग स्वयं मोदक द्वार प्रणीत होने से यह कभी तो 'साहित्यसार' तथा कभी 'साहित्यसारटीका' के नाम से व्यवहृत होता है। इसके अध्याय 'रत्न' कहे गए हैं। १२ रत्नों में विभक्त इस ग्रन्थ में विविध प्रकार के काव्यशास्त्रीय सिद्धान्तों, मत-वादों, काव्यतत्त्वों तथा विन्दुओं की व्याख्या, उदाहरण, दृष्टान्त एवं स्पष्टीकरण हेतु मोदक ने अपने द्वारा ही प्रणीत विविध ग्रन्थों के पद्यों को उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत किया है। इस प्रकार अपनी अन्यान्य कृतियों से उद्धरण, उदाहरण आदि देने के प्रसंग में मोदक ने अपने विवेच्य लघुकाय ग्रन्थ 'नीतिशतक' से भी कई पद्य; उदहारण स्वरूप प्रस्तुत किये हैं। इन पद्यों को हमने एकत्रित कर जब 'नतिशतक' की पाण्डुलिपि से मिलाया तो प्रायः सभी पद्य मिलते गए। कालान्तर में जब यह स्थिर हो गया कि इस शतक के रचयिता मोदक ही हैं और मोदक पर विवरण उपलब्ध हो गया तो 'नीतिशतक' 'नीतिशतपत्र' (जिसका उल्लेख स्वयं इस पाण्डुलिपि में भी है किन्तु न जाने संस्थान के विवरणकारों ने इसे 'नीतिशतक' के रूप में ग्रहण किया? यदि ग्रन्थान्त की पुष्पिका के इस अभिधान को ही ग्रन्थ का मूल अभिधान मान लिया गया होता तो 'अच्युत' को 'अच्युतराय मोदक' के रूप में पहचानने में इतना परिश्रम नहीं करना पड़ता।) के रूप में भी परिचित हो गया और इसका विवरण 'न्यू कैटोलोगॅस् कैटोलोगोरम्' के भाग-१० में निम्नवत् उपलब्ध हुआ[१] -

Or Acyutashataka, by Acyutaraya Modaka. *Harshe 119 IO. 7225,* ptd. Bombay 1869, C. by shri Hari Kavi. *Harshe 119.*

1. New Catalogous Catalogorum, part-10, pp. 162-163.

उपर्युक्त सूचना के अनुसार प्रस्तुत ग्रन्थ को 'अच्युतशतक' के नाम से भी जाना जाता है। हर्षे एक सुविख्यात प्राच्यविद्या-व्यसनी हो आए हैं और उनके आगे लिखी हुई संख्या उनके संग्रह में उपलब्ध पाण्डुलिपि की संख्या है।[२] इसके अनुसार हर्षे को इस ग्रन्थ की एक प्रति उपलब्ध थी जिसका क्रमांक ११९ है। *IO.* से आशय India Office (Library) London से है जहाँ इसकी एक प्रति ७२२५ संख्या पर सुरक्षित है।[३] उपर्युक्त सूचना के अनुसार संभवतः १८६९ ई. में मुंबई से इसका प्रकाशन भी हुआ है किन्तु प्रकाशित संस्करण उसके हस्तलिखित प्रति से भी अधिक, नितान्त दुर्लभ है। यह भी सूचित किया गया है कि इसकी कोई टीका श्रीहरि कवि ने की है और यह टीका भी हर्षे के पास उपलब्ध 'नीतिशतपत्र' की उपर्युक्त संख्यक पाण्डुलिपि में संलग्न है किन्तु हम इस बाबत कुछ भी नहीं कह सकते। हमारी प्रति में केवल मूल पद्य मात्र हैं।

संस्कृत-साहित्य के विलुप्त ग्रन्थ-रत्नों पर शोध-अनुसंधान करने वाले एवं प्रेमी विद्वानों की सूचना हेतु हम यह भी बता दें कि काशी स्थित उपर्युक्त संस्थान के पुस्तकालय (पाण्डुलिपि-विभाग) में मोदक की अन्य दो कृतियाँ और भी उपलब्ध हैं, जिनमें प्रथम 'शृंगारशतकम्' जिसे हस्तलिखित प्रति में 'रतिमुकुलम्' भी कहा गया है और द्वितीय 'आर्याशतकम्' जिसे हस्तलिखित प्रति में 'नीतिमुकुलम्' भी कहा गया है। जैसा कि हमने बताया 'साहित्यसार' में मोदक ने अपने अनेकानेक ग्रन्थों से उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत किए हैं; 'नीतिशतपत्र' के समान ही उपर्युक्त दोनों ग्रन्थों के भी अनेकानेक पद्यों को मोदक ने इस ग्रन्थ में उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत किया था अतः 'नीतिशतपत्र' के साथ ही उपर्युक्त दोनों ग्रन्थों के पद्यों को भी एकत्रित कर, जब 'साहित्यसार' से मिलाया गया तो प्रायः सभी पद्य इन हस्तलिखित प्रतियों में उपलब्ध होते चले गए। अब हमारे पास उपलब्ध हस्तलिखित 'नीतिशतपत्र' के कर्ता 'अच्युत' के 'अच्युतराय मोदक' होने में कोई शंका नहीं रह गई थी। साहित्यसार' में विविध काव्यशास्त्रीय सिद्धान्तों के उदारण हेतु 'नीतिशतपत्र' के जिन पद्यों को उद्धृत किया गया है उन्हें हम नीचे प्रस्तुत कर देते हैं -

१. कौस्तुभरत्न के २२ वें पद्य की टीका में 'व्यंग्योपमा' को परिभाषित कर उदहारण हेतु कहते हैं - *'यथा वास्मन्नीतिशतपत्रे'* –

   हितेच्छुना तु कर्तव्यः सतामेव समागमः। सरसानां सुमनसां षट्पदेनेव सर्वदा।।

   यह पद्य 'नीतिशतपत्र' की हमारी हस्तलिखित प्रति के प्रथम पत्र (र्१ी) में द्वितीय पद्य के रूप में प्राप्य है।

२. कौस्तुभरत्न के ६८ वे पद्य की टीका में 'विम्बप्रतिविम्बभाव' को स्पष्ट करने हेतु उदाहरण देते हुए कहते हैं -

   गुणैरनेकैर्युक्तोऽपि दुष्टस्यैकस्य योगतः। वर्ज्य एव पुमान्भूयाद्भुजङ्गस्येव चन्दनः।।

   यह पद्य 'नीतिशतपत्र' की हमारी पाण्डुलिपि के द्वितीय पत्र (र्२ी) में दसवें पद्य के रूप में प्राप्य है।

---

2. A Discriptive Catalogue of Sanskrit Manuscripts of the Vinayak Mahadev Gorhe collection by R. G. harshe, Deccan College Post-Graduae and research institute, Poona 1942 A.D. हर्षे के इसी कैटलाग् से New Catalogous Catalogorum, part-10, pp. 162-163 में अच्युतराय मोदक रचित नीतिशतक का विवरण दिया गया है.
3. *IO.* A Catalogue of Sanskrit and Prakrit Manuscripts in the India Office Library, by Julius Eggeling, 2 parts, (London 1887 and 1896). And vol.-2 in two parts by A. B. Keith, with a supplement Manuscripts, by F. W. Thomas, London 1935.

३. कौस्तुभरत्न के ७७ वें पद्य की टीका में किसी काव्यतत्त्व की व्याख्या हेतु उदारण प्रस्तुत करते हैं -

तारुण्यारोपितगुणे सुन्दरीभ्रूशरासने। नम्रत्वमेव संपाद्य जगज्जयति मन्मथः।।

यह पद्य 'नीतिशतपत्र' की पाण्डुलिपि के पाँचवे पत्र (र्५ी) में ५६ वें पद्य के रूप में प्राप्त होता है।

४. कौस्तुभरत्न में ही 'उदाहरणालङ्कार' को व्याख्यायित कर ८६ वें पद्य की टीका में जो उदाहरण देते हैं वह ऊपर संख्या २ पर आया हुआ पद्य 'गुणैरनेकैर्युक्तोऽपि'..... आदि ही है।

५. कौस्तुभरत्न में रूपकालङ्कार के 'परंपरितरूपक' भेद को व्याख्यायित कर १०६ वां पद्य उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत करते हैं और अन्य उदहारण के रूप में जो पद्य प्रस्तुत करते हैं वह निम्नवत् है -

मूर्खताख्या पिशाचीयं यस्य चेतसि संविशेत् । तमेव भ्रामयत्याशापञ्चकेऽप्यनिशं वृथा ।।

यह पद्य 'नीतिशतपत्र' की हमारी हस्तलिखित प्रति के दूसरे पत्र (२/ं) में २१ वें पद्य के रूप में प्राप्य है।

६. कौस्तुभरत्न में १८७ वें पद्य की टीका में श्लेषभेद को प्रदर्शित करते हुए निम्नलिखित पद्य प्रस्तुत करते हुए कहते हैं *'यथा वास्मन्नीतिशतपत्रे'* -

सद्वृत्तमेव संसेव्य गुरवो लघवोऽपि च। सर्वे वर्णाः समायान्ति सर्वार्थैः श्रुतियोग्यताम् ।।

प्रस्तुत पद्य 'नीतिशतपत्र' की हस्तलिखित प्रति के प्रथम पत्र (१/ं) में तृतीय पद्य के रूप में प्राप्त होता है।

७. गुणरत्न में 'निर्हेत्वपवाद' को व्याख्यायित करते हुए ६५ वां पद्य देते हैं और इसकी टीका में उदारहण स्वरूप जो एक और पद्य प्रस्तुत करते हैं वह ऊपर संख्या ३ पर आया हुआ पद्य 'तारुण्यारोपितगुणे'..... ही है।

८. गुणरत्न में 'समाप्तपुनराप्त' दोष के अपवाद 'समाप्तपुनराप्तापवाद' को व्याख्यायित कर ३४ वां पद्य प्रस्तुत करते हैं और इसकी टीका में इसे और भी स्पष्ट करने हेतु जो उदारहण देते हैं -

श्रीगौर्यालिङ्गितं वन्दे सुप्रसन्नं सदाशिवं। युक्तं गुहगणेशाभ्यां स्तुतं वेदैः सुरैरपि।।

यह 'नीतिशतपत्र' की हमारी पाण्डुलिपि के प्रथम पत्र (र्१ी) में प्रथम (मङ्गलाचरण हेतु प्रयुक्त) पद्य है।

९. साहित्यसार, पृष्ठ-४३५, १६८ पद्य में 'प्रतिवस्तूपमा' के उदाहरण में निम्नलिखित पद्य को प्रस्तुत करते हैं -

तृष्णैवा(ऽ)खिला दोषास्तच्छित्यैवा(ऽ)खिला गुणाः। मोदाः सर्वे विद्ययैव शोकाः सर्वे(ऽ)प्यविद्यया।।

यह हमारी पाण्डुलिपि के सातवें पत्र (र्७ी) में ९१ वां पद्य है।

१०. पृष्ठ ३७० पर भी एक पद्य प्रस्तुत करते हैं जो कि इसी नीतिशतपत्र से उद्धृत बताया गया है -

यो निमेषमपि व्यर्थं प्राणान्ते(ऽ)पि न वै नयेत्। तस्यैव विद्या सीस्याद्योगीन्द्रस्येव मुक्तता।।

यह हमारी पाण्डुलिपि के तीसरे पत्र (र्७ी) में उपलब्ध २५ वां पद्य है।

इसी प्रकार अन्य भी कई ऐसे पद्य हैं जिन्हें मोदक ने विविध साहित्यशास्त्रीय तथ्यों की व्याख्या हेतु और उनके उदाहरण हेतु 'नीतिशतपत्र' से 'साहित्यसार' में उद्धृत किये हैं। विषय-विस्तार के भय से उन्हें हम यहाँ नहीं प्रस्तुत कर रहे। इस प्रकार अच्युतराय मोदक जो कि 'साहित्यसार' अथवा 'साहित्यसारव्याख्या' के सर्वमान्य लेखक हैं; के द्वारा अपने इसी ग्रन्थ में 'नीतिशतपत्र' नामा ग्रन्थान्तर के पद्यों को अपना बताकर प्रस्तुत किये जाने के साक्ष्य

पर हम इस निर्भ्रान्त तथा निःशंक निर्णय पर पहुंचते हैं कि विवेच्य ग्रन्थ 'नीतिशतपत्र' जिसका; उपर्युक्त संस्थान के विवरणकारों ने उसकी विषय-वस्तु तथा लोक-प्रचलन के कारण 'नीतिशतकम्' के रूप में विवरण दिया है, -का लेखक 'अच्युत' कोई और नहीं यही 'अच्युतराय मोदक' हैं।

'अच्युतराय मोदक; संक्षिप्त परिचय -

'नीतिशतपत्र' के रूप में इस प्रकार अच्युतराय मोदक के व्यवस्थित हो जाने पर प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक ने मोदक के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के विवरण हेतु संस्कृत-साहित्य के विविध इतिहास ग्रन्थों, संदर्भ-ग्रन्थों तथा सूचीपत्र आदि का अवलोकन किया किन्तु इस प्रसंग में भी सर्वत्र निराशा ही हाथ लगी।[४] संस्कृत-साहित्य के उपलब्ध इतिहास-ग्रन्थों में मोदक की चर्चा 'नहीं' के बराबर है। सूचीपत्रों में यदा-कदा इनकी कृतियों की सूचना दी गई है किन्तु केवल उतनी ही, जितनी 'पाण्डुलिपि-विवरणिका' या 'हस्तलिखित-ग्रन्थ-सूचीपत्र' के लिए आवश्यक होती है। इनसे हमारा कोई भी प्रयोजन सिद्ध नहीं होता। केवल दो स्थानों; 'न्यू कैटॉलोगोस् कैटोलोगोरम्' एवं एक प्रसिद्ध मराठी 'चरितकोश' में मोदक से संबन्धित कुछ विवरण हाथ लग सके, जो कि निम्नवत् हैं -

सिद्धेश्वर शास्त्री चित्राव अपने समय के सुविख्यात कोशकार एवं इतिहासविद् हो आए हैं। आपका मराठी भाषा में लिखा 'मध्ययुगीन चरित्र कोश' अपनी तरह का अनोखा कोश है। शास्त्री जी ने मोदक से संबन्धित जो विवरण दिया है उसके अनुसार (विवरण मूल मराठी का अविकल हिन्दी अनुवाद है)[५] -

"अच्युतराय मोदक एक संस्कृत कवि हो आये हैं। ये नासिक के समीप के रहने वाले थे। रघुनाथ भट्ट उनके गुरु थे। इनकी 'कृष्णलीला' नामा संस्कृत काव्य बहुत ही मनोहारी है। इसके अलावा अन्य भी बहुत से रोचक काव्यग्रन्थ इनके लिखे हैं। त्र्यंबकराज बाबा गोसावी नाशिककर इनके सुयोग्य शिष्य थे। शक संवत् १७०० में इनका जन्म हुआ और ५५ वर्ष की अवस्था में शक संवत् १७५५ में नाशिक के समीप ये मृत्यु को प्राप्त हुए; ऐसी लोकप्रसिद्धि है।"

'न्यू कैटॉलोगोस् कैटोलोगोरम्' के प्रथम भाग में प्रो. वी. राघवन् ने जो मोदक से संबन्धित विवरण दिया है उसके अनुसार - "अच्युतराय मोदक के पिता का नाम 'षष्टि नारायण' एवं माता का नाम 'अन्नपूर्णा' था। मोदक, आदित्य सच्चिदानन्देन्द्र सरस्वती के सुयोग्य शिष्य थे। शिव की पराभक्ति में मोदक को दीक्षित करने वाले गुरु थे कोई 'महादेव' जबकि मोदक ने अपने एक अन्य गुरु का उल्लेख अपनी एक कृति 'भागीरथीचम्पूः' जो कि ईस्वी सन् १८१४ मे प्रणीत हुआ था, -में किया है, ये हैं 'रघूत्तमाचार्य'।'[६]

4. हिन्दी विश्वकोश (नगेन्द्र नाथ वसु, कोलकाता) में अच्युत नामा बीस से अधिक कवियों, ग्रन्थकारों का विवरण दिया गया है। इनमें मोदक के कतिपय ग्रन्थों का भी उल्लेख मात्र है। नागरीप्रचारिणी सभा से प्रकाशित हिन्दी विश्वकोश में अच्युत नामा किसी कवि कोई विवरण उपलब्ध नहीं होता।
5. मध्ययुगीन चरित्र कोश, सिद्धेश्वर शास्त्री चित्राव. पूना.
6. New Catalogous Catalogorum, part-1, pp. 74-76.

मोदक से संबन्धित इससे अधिक विवरण हमें अभी तक उपलब्ध नहीं हो सका है जबकि वी. राघवन् की एक सूचना यहाँ बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। राघवन् ने किसी 'एम. एच. खरे' नामा विद्वान् के द्वारा अच्युतराय मोदक के कुल-गोत्र, व्यक्तित्व-कृतित्व आदि से संबन्धित 'मोदककुल वृत्तान्त' नामकी पुस्तक की रचना का उल्लेख किया है[७] किन्तु दुर्भाग्य से यह पुस्तक आज तक हमारे हाथ नहीं लग सकी है। निश्चय ही इसके उपलब्ध हो जाने पर मोदक से संबन्धित अन्य ज्ञातव्य बातें प्रकाश में आ जाएंगी। उपर्युक्त दोनों विद्वानों के विवरणों से इतना तो स्पष्ट है कि मोदक सत्रहवीं सदी के उत्तरार्द्ध एवं अठारहवीं सदी के प्रारंभिक दशकों में इस धरा-धाम पर वर्तमान थे। मोदक संस्कृत-साहित्य के एक विलक्षण रचनाकार, गंभीर साहित्य-शास्त्री एवं विविध दर्शनों के स्थापित आचार्य रह आए हैं। राघवन् ने आपकी रचनाओं की जो सूची प्रस्तुत की है उस पर दृष्टिपात करें तो हम आश्चर्यचकित रह जाते हैं।

उत्तरमध्यकालीन 'ब्रिटिश-शासन' के अधीन भारतीय इतिहास में यूं तो संस्कृत-साहित्य एवं उसके वाङ्मय के पर्याप्त प्रचार-प्रसार एवं उसके समुचित विकास के उपाय किये जाते रहे किन्तु इस रूप में अधिकाधिक योगदान स्वयं कंपनी (ईस्ट इण्डिया कंपनी) के शिक्षा-विभाग से संबन्धित अधिकारियों का ही रहा है। स्वतंत्र संस्कृत-अध्ययन, अध्यापन, ग्रन्थ-लेखन, साहित्य-निर्माण आदि की परंपरा निर्बाध रूप से प्रवर्तित रही हो इसमें कोई शंका नहीं किन्तु जिन दशकों में मोदक ने संस्कृत-साहित्य की सेवा की है और उसकी श्री-वृद्धि में अविस्मरणीय योगदान दिया है वह काल इस प्रकार के किसी अन्य उदाहरण की प्रस्तुति में सर्वथा असमर्थ है। 'पण्डितराजान्तं कवित्वं' के रूप में जिस संस्कृत-साहित्य-शास्त्र के विलुप्त होने की बात जनसाधारण में प्रचलित है निश्चय ही मोदक इस जन-भ्रान्ति को दूर करने में समर्थ हैं। पण्डितराज की तार्किकता, बलात् साहित्य-विश्लेषण और उद्धत पाण्डित्य को छोड़ दिया जाए तो मोदक उनके लघु-संस्करण से प्रतीत होंगे। 'काव्यं मयात्र विहितं न परस्य किञ्चित्' की प्रतिज्ञा तो मोदक नहीं करते किन्तु 'साहित्यसार' में इस नियम का यथाशक्ति पालन करते वे अवश्य पाए जाते हैं। जगन्नाथ के 'भामिनीविलास' पर मोदक द्वारा की गई टीका में दोनों के प्रातिभ-कवित्व एवं काव्य-विश्लेषण की सूक्ष्म दृष्टि का अच्छा अवसर प्राप्त हो जाता है।[८] मोदक का रचना-संसार बहुत ही विशाल और व्यापक है। साहित्य-रचना में भी उन्होंने कई विधाओं पर अपनी सिद्ध लेखनी से चमत्कार उत्पन्न किए हैं। उनकी ग्रन्थ-सूची में दर्शन से संबन्धित अनेक ग्रन्थ हैं; जो साक्षी हैं उनके गूढ़ दर्शन-ज्ञान का। किन्तु इतना सब कुछ होते हुए भी संस्कृत-साहित्य-शास्त्र के इतिहास ने मोदक को अब तक हाशिये पर ही रखा है। संस्कृत-साहित्य के इतिहास ने तो उतनी भी उदारता नहीं बरती और जिस कवि पर उसे गर्व होना चाहिए उसे ही उसने आज तक भुलाए रखा है। मोदक के आस-पास के युग में आचार्य विश्वेश्वर पाण्डेय को जो महत्त्व तथा सम्मान संस्कृत काव्य-शास्त्र तथा संस्कृत-साहित्य के इतिहास ने प्रदान किया है निश्चय ही मोदक उससे कहीं अधिक महत्त्व और सम्मान के अधिकारी हैं। आशा है संस्कृत-काव्यशास्त्र एवं साहित्य-इतिहास के विद्यार्थी मोदक को संस्कृत शोध-अनुसंधान के साथ ही पठन-पाठन की मुख्य धारा में सम्मिलित करेंगे।

---

7. New Catalogous Catalogorum, part-1, page-74.

हम बता चुके हैं कि मोदक का रचना-संसार बहुत ही व्यापक और विस्तृत है। V. Raghvan तथा M. H. Khare आदि अनुसन्धान-प्रेमियों ने मोदक के कृतित्व की विशाल सूची प्रस्तुत की है। इस सूची को देखकर मोदक की विलक्षण विद्वत्ता, उसके प्रकाण्ड पाण्डित्य आदि का अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है। खरे ने उनकी अन्य कृतियों की सूचना भी दी है जिसे राघवन् मान्यता नहीं देते। वैसे मोदक पर अभी बहुत कुछ शोध एवं अनुसंधान कार्य अवशिष्ट ही है जिसके अभाव में राघवन् ही नहीं स्वयं मेरी कुछ प्राक्कल्पनाएं भी ध्वस्त हो सकती हैं, विशेषकर 'अद्वैतमञ्जरी, अद्वैतामृतमञ्जरी, रतिमुकुल, रतिनीतिमुकुल आदि से संबन्धित प्राक्कल्पनाएं। स्वयं 'नीतिशतपत्र' या 'नीतिशतक' या 'अच्युतशतक' के रूप में विवेच्य ग्रन्थ; जिसकी पाण्डुलिपि पर यहाँ प्रकाश डाला गया है, -ही अभी पूर्णतः अपने वास्तविक रूप में प्रकाश में नहीं आ सका है। इसका एक कारण भी है जिसे विद्वानों के समक्ष रखना उचित होगा। मोदक ने 'साहित्यसार' पृष्ठ-४४४ पर 'समासोक्ति'-अलङ्कार को परिभाषित करते हुए पद्य संख्या-१७९ की टीका में निम्नलिखित एक पद्य को नीतिशतपत्र से उद्धृत बताया है -

मलिनेऽपि रागपूर्णां विकसितवदनामनल्पतल्पेऽपि।
त्वयि चपलेऽपि च सरसां भ्रमर कथं वा सरोजिनीं त्यजसि।।

किन्तु हमारे पास उपलब्ध 'नीतिशतपत्र' की प्रति में यह पद्य उपलब्ध नहीं है। वैसे स्मरण में रखने योग्य सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य यह है कि यह पद्य 'नीतिशतपत्र' का हो ही नहीं सकता। कारण कि 'नीतिशतपत्र' को मोदक ने केवल अनुष्टुब् छन्द में ही लिखा है। इसमें आर्या का कहीं कोई प्रयोग नहीं और ऊपर जिस पद्य को प्रस्तुत किया गया है वह आर्या में है। हाँ मोदक ने 'रतिमुकुल' 'नीतिमुकुल' तथा 'रतिनीतिमुकुल' आदि की रचना अवश्य आर्या छन्दों में की है। जबकि आश्चर्य की बात है कि संस्थान में उपलब्ध 'रतिमुकुल' 'नीतिमुकुल' दोनों ही शतक-काव्यों में उपर्युक्त पद्य को ढूंढा गया और यह पद्य दोनों ही शतक-काव्यों में कहीं भी उपलब्ध न हुआ। संभावना है कि 'रतिनीतिमुकुल' या फिर 'अद्वैतमञ्जरी' या 'अद्वैतामृतमञ्जरी' में यह पद्य आया हो। तब प्रश्न आता है कि मोदक ने इसे 'नीतिशतपत्र' से उद्धृत क्यों बताया? कहीं यह मोदक की असावधानी तो नहीं! अस्तु, मोदक की कृतियों को विस्तार से प्रस्तुत करने वाले खरे साहब की सूची भी कितनी मान्य और साक्ष्यों पर आधारित है; जब तक उनकी पुस्तक नहीं मिल जाती कुछ भी नहीं कहा जा सकता। किन्तु जिस लेखक के रचना संसार को उपर्युक्त सूची में प्रस्तुत किया गया है उसकी अन्य भी कतिपय रचनाएं अभी विश्वविद्यालयों व पुस्तकालयों में लाल कपड़ों में लिपटी पड़ी हों; इस तथ्य का विरोध नहीं किया जा सकता। आवश्यकता है ऐसी रचनाओं को प्रकाश में लाने की और उन्हें सामान्य संस्कृत-सेवी समाज में प्रसारित और प्रचारित करने की ।

प्रस्तुत शोधपत्र में मोदक की इस अज्ञात एवं दुर्लभ कृति के एक हस्तलिखित प्रति का परिचय मात्र प्रस्तुत किया गया है, आशा है निकट भविष्य में मोदक की अन्यान्य कृतियों सहित उनके व्यक्तित्व पर और भी प्रकाश डाला जाएगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Raghavan, Dr. V., 1949 A.D., New Catologos Catologorum (vol.-1), University of Madras, Madras, India.

2. Raja, Dr. Kunjunni K., 1978 A.D., New Catologos Catologorum (vol.-10), University of Madras, Madras, India.
3. काणे, पी. वी. (लेखक), शास्त्री इन्द्रचन्द्र (अनुवादक), संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास, मोतीलाल बनारसीदास, नई दिल्ली, भारत.
4. चित्राव, सिद्धेश्वर शास्त्री, १९३७ ई., मध्ययुगीन चरित्र कोश, भारतवर्षीय चरित्र-कोश मण्डल, पूना.
5. मोदक, अच्युतराय (लेखक), पंशीकर वासुदेव (संपादक), १९०६ ई., साहित्यसार, निर्णय-सागर, मुंबई.
6. वसु, नगेन्द्र नाथ, १९३५ ई., हिन्दी विश्वकोश (भाग-१), विश्वकोश लेन, कलकत्ता. प. बं.